राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • शनिवार • 20 जुलाई • 2024

ऊसर भूमि को उपजाऊ बनाने के किसानों को सिखाए तरीके

सीएसए में पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

नुर (एसएनबी)। खर आजाद कृषि एवं ाकी विश्वविद्यालय कानपुर धीन संचालित कृषि विज्ञान दिलीप नगर पर निक्रा जना अंतर्गत ऊसर भूमि एवं जलवायु अनुकूल ों की विभिन्न प्रजातियां पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण किया गया। इस अवसर पर के मृदा वैज्ञानिक डॉ. न खान ने कृषकों को एवं ऊसर से प्रभावित ो सुधार कर उसमें खेती के लिए जानकारी दी।

न्होंने ऊसर भूमि की पहचान के लिये वताया कि लवणों की अधिकता होती है, ऐसी भूमि में कृषि न कम होता है। उन्होंने ऊसर भूमि वनने के ं पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि जमीन ती छोड़ देना, पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, कम . ज्यादा तापमान आदि प्रमुख कारण हैं। उन्होंने कहा कि ऐसी भूमियों में ढैचा वुवाई तथा मेड़वंदी और जिप्सम मिक्सिंग का कार्य अवश्य करें।

वरिष्ठ गृह वैज्ञानिक डॉ. मिथिलेश वर्मा ने वताया कि किसान भाई ऊसर सहनशील विभिन्न फसलों की प्रजातियां को अवश्य वोएं, जिससे उन्हें ऊसर भूमियों में भी उत्पादन एवं उत्पादकता अधिक प्राप्त हो।

उद्यान वैज्ञानिक डॉ. अरुण कुमार सिंह ने ऊसर भूमियों में वागवानी के लिये किसानों को गुर सिखाए। डॉ. सिंह ने किसानों को संवोधित करते हुए कहा कि ऊसर भूमियों में फलदार पेड़ जैसे जामुन, वेल, अमरूद, आंवला, लसोड़ा, शहतूत, नींवू ,करौंदा आदि की वागवानी करें। जवकि छायादार पौधे के लिए सहजन, नीम, करंज, महुआ आदि की वागवानी कर अधिक लाभ अर्जित करें। कार्यक्रम को संवोधित शुभम यादव, गौरव शुक्ला एवं श्री भगवान पाल ने किया।

अमर भारती

04 प्रदेश, 06 संस्करण

एक उम्मीद

वर्षः 13, अंकः 201, पृष्ठः 12, मूल्यः 03 रु. RNI No. UPHIN/2011/46455 www.amarbharti.com शनिवार, 20 जुलाई 2024 शक सम्वत् 1946, आषाढ़ शुक्ल पक्ष

निक्रा परियोजना अंतर्गत पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण शुरू

अमर भारती ब्यूरो

कानपुर। सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर पर निक्रा परियोजना अंतर्गत ऊसर भूमि सुधार एवं जलवायु अनुकूल फसलों की विभिन्न प्रजातियां विषय पर पांच दिवसीय (19 से 23 जुलाई 2024) कृषक प्रशिक्षण प्रारंभ किया गया। इस अवसर पर केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने कृषकों को ऊसर एवं ऊसर से प्रभावित भूमि को सुधार कर उसमें खेती करने हेतु जानकारी दी।उन्होंने ऊसर भूमि की पहचान हेतु बताया कि इसमें लवणों की अधिकता होती है, ऐसी भूमि में कृषि उत्पादन कम होता है। उन्होंने ऊसर भूमि बनने के कारणों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि जमीन को परती छोड़ देना, पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, कम बारिश ज्यादा तापमान, आदि प्रमुख कारण हैं। उन्होंने ऊसर भूमियों को सुधारने के लिए कहा कि ऐसी भूमियों में ढैचा बुवाई तथा मेड़बंदी और जिप्सम मिक्सिंग का कार्य अवश्य करें। वरिष्ठ गृह वैज्ञानिक डॉक्टर मिथिलेश वर्मा ने बताया कि कृषक भाई ऊसर सहनशील विभिन्न फसलों की प्रजातियां को अवश्य बोएं जिससे उन्हें ऊसर भूमियों में भी उत्पादन एवं उत्पादकता अधिक प्राप्त हो।

उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अरुण कुमार सिंह ने ऊसर भूमियों में बागवानी के हेतु कृषकों को गुर सिखाए।डॉक्टर सिंह ने कृषकों को संबोधित करते हुए कहा कि ऊसर भूमियों में फलदार पेड़ जैसे जामुन, बेल, अमरूद, आंवला, लसोड़ा, शहतूत, नींबू ,करौंदा आदि की बागवानी करें। जबकि छायादार पौधे हेतु सहजन, नीम, करंज, महुआ आदि की बागवानी कर अधिक लाभ अर्जित करें। कार्यक्रम को शुभम यादव, गौरव शुक्ला एवं श्री भगवान पाल ने विशेष सहयोग प्रदान कर सफ़ल बनाया।कृषक प्रशिक्षण में प्रगतिशील किसान श्री राम अवतार, राम शंकर, सियाराम एवं अशोक कुमार सिंह सहित 25 से अधिक किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

विभिन्न फसलों की प्रजातियां को अवश्य बोएं, ऊसर भूमियों में उत्पादन बढ़ेगा

ऊसर भूमियों में लगायें जामुन, बेल, अमरूद, आंवला जैसे छायादार पौधे

कानपुर, 19 जुलाई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर पर निक्रा परियोजना अंतर्गत ऊसर भूमि सुधार एवं जलवायु अनुकूल फसलों की विभिन्न प्रजातियां विषय पर पांच दिवसीय (19 से 23 जुलाई 2024) कृषक प्रशिक्षण प्रारंभ किया गया। इस अवसर पर केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने कृषकों को ऊसर एवं ऊसर से प्रभावित भूमि को सुधार कर उसमें खेती करने हेतु जानकारी दी। उन्होंने ऊसर भूमि की पहचान हेतु बताया कि इसमें लवणों की अधिकता होती है, ऐसी भूमि में कृषि उत्पादन कम होता है। उन्होंने ऊसर भूमि बनने के कारणों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि जमीन को परती छोड़ देना, पेड़ों की अंधाधुंध कटाई,कम बारिश च्यादा तापमान, आदि प्रमुख कारण हैं। उन्होंने ऊसर भूमियों को सुधारने के लिए कहा कि ऐसी भूमियों में ढैचा बुवाई तथा मेड़बंदी और जिप्सम मिक्सिंग का कार्य अवश्य करें। वरिष्ठ गृह वैज्ञानिक डॉक्टर मिथिलेश वर्मा ने बताया कि कृषक भाई ऊसर सहनशील विभिन्न फसलों की प्रजातियां को अवश्य बोएं जिससे उन्हें ऊसर भूमियों में भी उत्पादन एवं उत्पादकता अधिक प्राप्त हो। उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अरुण कुमार सिंह ने ऊसर भूमियों में बागवानी के हेतु कृषकों को गुर सिखाए। डॉक्टर सिंह ने कृषकों को संबोधित करते हुए कहा कि ऊसर भूमियों में फलदार पेड़ जैसे जामुन, बेल, अमरूद, आंवला, लसोड़ा, शहतूत, नींबू ,करौंदा आदि की बागवानी करें। जबकि छायादार पौधे हेतु सहजन, नीम, करंज, महुआ आदि की बागवानी कर अधिक लाभ अर्जित करें। कार्यक्रम को शुभम यादव, गौरव शुक्ला एवं भगवान पाल ने विशेष सहयोग प्रदान कर सफ़ल बनाया। कृषक प्रशिक्षण में प्रगतिशील किसान राम अवतार, राम शंकर, सियाराम एवं अशोक कुमार सिंह सहित 25 से अधिक किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

कार्यक्रम को सम्बोधित वैज्ञानिक डॉ. खलील खान व अन्य।

निक्रा परियोजना अंतर्गत पांच दिवसीय विशेष कृषक प्रशिक्षण शुरू

हिंदी दैनिक

रहस्य संदेश

अंक-202 लखनऊ व एटा से प्रकाशित शनिवार, 20 जुलाई 2024 R.N.I. No.: UPHIN/2007/20715 पृष्ठ- 4 मूल्य- 2

रहस्य सन्देश

एटा/कासगंज

निक्रा परियोजना अंतर्गत पांच दिवसीय विशेष कृषक प्रशिक्षण प्रारंभ

कानपुर न्यूज़
रहस्य संदेश ब्यूरो

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर पर निक्रा परियोजना अंतर्गत 卐ऊसर भूमि सुधार एवं जलवायु अनुकूल फसलों की विभिन्न प्रजातियां卐 विषय पर पांच दिवसीय (19 से 23 जुलाई 2024) कृषक प्रशिक्षण प्रारंभ किया गया। इस अवसर पर केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने कृषकों को ऊसर एवं ऊसर से प्रभावित भूमि को सुधार कर उसमें खेती करने हेतु जानकारी दी।उन्होंने ऊसर भूमि की पहचान हेतु बताया कि इसमें लवणों की अधिकता होती है, ऐसी भूमि में कृषि उत्पादन कम होता है।उन्होंने ऊसर भूमि बनने के कारणों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि जमीन को परती छोड़ देना, पेड़ों की अंधाधुंध कटाई,कम बारिश ज्यादा तापमान, आदि

प्रमुख कारण हैं। उन्होंने ऊसर भूमियों को सुधारने के लिए कहा कि ऐसी भूमियों में ढैचा बुवाई तथा मेड़बंदी और जिप्सम मिक्सिंग का कार्य अवश्य करें। वरिष्ठ गृह वैज्ञानिक डॉक्टर मिथिलेश वर्मा ने बताया कि कृषक भाई ऊसर सहनशील विभिन्न फसलों की प्रजातियां को अवश्य बोएं जिससे उन्हें ऊसर भूमियों में भी उत्पादन एवं उत्पादकता अधिक प्राप्त हो। उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अरुण कुमार सिंह ने ऊसर भूमियों में बागवानी के हेतु कृषकों को गुर सिखाए।डॉक्टर सिंह ने कृषकों को संबोधित करते हुए कहा कि ऊसर भूमियों में फलदार पेड़ जैसे जामुन, बेल, अमरूद, आंवला, लसोड़ा, शहतूत, नींबू ,करौंदा आदि की बागवानी करें। जबकि छायादार पौधे हेतु सहजन, नीम, करंज, महुआ आदि की बागवानी कर अधिक लाभ अर्जित करें। कार्यक्रम को शुभम यादव, गौरव शुक्ला एवं श्री भगवान पाल ने विशेष सहयोग प्रदान कर सफ़ल बनाया।कृषक प्रशिक्षण में प्रगतिशील किसान श्री राम अवतार, राम शंकर, सियाराम एवं अशोक कुमार सिंह सहित 25 से अधिक किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

हेन्दी दैनिक)
R.N.I. No. Utthin/2018/76731
(गांव देहात की खबर, शहर पर भी नजर)
दि ग्राम टुडे
उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश से एक साथ प्रसारित
: 06 अंक : 224 देहरादून, शनिवार, 20 जुलाई 2024 मूल्य : 2 रुपये पृष्ठ - 8

निक्रा परियोजना अंतर्गत पांच दिवसीय विशेष कृषक प्रशिक्षण प्रारंभ

दि ग्राम टुडे, कानपुर।
(संजय मौर्य)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर पर निक्रा परियोजना अंतर्गत ÷ऊसर भूमि सुधार एवं जलवायु अनुकूल फसलों की विभिन्न प्रजातियां÷ विषय पर पांच दिवसीय (19 से 23 जुलाई 2024) कृषक प्रशिक्षण प्रारंभ किया गया। इस अवसर पर केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने कृषकों को ऊसर एवं ऊसर से प्रभावित भूमि को सुधार कर उसमें खेती करने हेतु जानकारी दी।उन्होंने ऊसर भूमि की पहचान हेतु बताया कि इसमें लवणों की अधिकता होती है, ऐसी भूमि में कृषि उत्पादन कम होता है।उन्होंने ऊसर भूमि बनने के कारणों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि जमीन को परती छोड़ देना, पेड़ों की अंधाधुंध कटाई,कम बारिश ज्यादा तापमान, आदि प्रमुख कारण हैं। उन्होंने ऊसर भूमियों को सुधारने के लिए कहा कि ऐसी भूमियों में ढैचा बुवाई तथा

मेड़बंदी और जिप्सम मिक्सिंग का कार्य अवश्य करें। वरिष्ठ गृह वैज्ञानिक डॉक्टर मिथिलेश वर्मा ने बताया कि कृषक भाई ऊसर सहनशील विभिन्न फसलों की प्रजातियां को अवश्य बोएं जिससे उन्हें ऊसर भूमियों में भी उत्पादन एवं उत्पादकता अधिक प्राप्त हो। उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अरुण कुमार सिंह ने ऊसर भूमियों में बागवानी के हेतु कृषकों को गुर सिखाए।डॉक्टर सिंह ने कृषकों को संबोधित करते हुए कहा कि ऊसर भूमियों में फलदार पेड़ जैसे जामुन, बेल, अमरूद, आंवला, लसोड़ा, शहतूत, नींबू ,करौंदा आदि की बागवानी करें। जबकि छायादार पौधे हेतु सहजन, नीम, करंज, महुआ आदि की बागवानी कर अधिक लाभ अर्जित करें। कार्यक्रम को शुभम यादव, गौरव शुक्ला एवं श्री भगवान पाल ने विशेष सहयोग प्रदान कर सफ़ल बनाया।कृषक प्रशिक्षण में प्रगतिशील किसान श्री राम अवतार, राम शंकर, सियाराम एवं अशोक कुमार सिंह सहित 25 से अधिक किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

041 तक मुस्लिम राज्य बन जाएगा असम... 12

जमानत के बाद बाहर आते युवकों को मनबढ़ों ने पीटा 10

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्ष: 15 | अंक: 276
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12
शनिवार | 20 जुलाई, 2024

किसानों को ऊसर से प्रभावित भूमि पर खेती करने के लिए दी जानकारी

जन एक्सप्रेस | कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर पर निक्रा परियोजना के अंतर्गत ऊसर भूमि सुधार एवं जलवायु अनुकूल फसलों की विभिन्न प्रजातियां विषय पर शुक्रवार को पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण प्रारंभ किया गया। जिसमें मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने किसानो को ऊसर एवं ऊसर से प्रभावित भूमि को सुधार कर उसमें खेती करने के लिए जानकारी दी। उन्होंने ऊसर भूमि की पहचान के लिए बताया कि इसमें लवणों की अधिकता होती है व ऐसी भूमि में कृषि उत्पादन कम होता है। ऊसर भूमि बनने के कारणों के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि जमीन को परती छोड़ देना, पेड़ों की अंधाधुंध कटाई,कम बारिश ज्यादा तापमान, आदि इसके प्रमुख कारण हैं। उन्होंने बताया कि ऊसर भूमियों को सुधारने के लिए भूमि में ढैचा बुवाई तथा मेड़बंदी और जिप्सम मिक्सिंग का कार्य अवश्य करना चाहिए। वरिष्ठ गृह वैज्ञानिक डॉ.मिथिलेश वर्मा ने बताया कि किसान ऊसर सहनशील विभिन्न फसलों की प्रजातियां को बोएं जिससे उन्हें ऊसर भूमियों में भी उत्पादन एवं उत्पादकता अधिक प्राप्त हो सके। उद्यान वैज्ञानिक डॉ.अरुण कुमार सिंह ने ऊसर भूमियों में बागवानी के लिए किसानो को बताया कि ऊसर भूमियों में फलदार पेड़ जैसे जामुन, बेल, अमरूद, आंवला, लसोड़ा, शहतूत, नींबू, करौंदा आदि की बागवानी करें व छायादार पौधे के लिए सहजन, नीम, करंज, महुआ आदि की बागवानी कर अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। प्रशिक्षण में प्रगतिशील किसान राम अवतार, राम शंकर, सियाराम एवं अशोक कुमार सिंह सहित 25 से अधिक किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

मौसम
अधिकतम तापमान 33.c
27.c न्यूनतम तापमान
बाजार
सोना 74.755g
चांदी 91.150kg
सेंसेक्स 79,441.45
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
यूपी मैसेंजर
जनता की आवाज
04 बाबा बैद्यनाथ धाम : जहां पंचशूल के दर्शन मात्र से कट जाते है सारे दुख - दर्द
मुझे गुस्सा आता है जब मैं कुछ गल
वर्ष :10 अंक :169 लखनऊ से प्रकाशित लखनऊ ,शनिवार 20 जुलाई 2024 पृष्ठ : 08

निक्रा परियोजना अंतर्गत पांच दिवसीय विशेष कृषक प्रशिक्षण शुरू

कानपुर ,सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर पर निक्रा परियोजना अंतर्गत ऊसर भूमि सुधार एवं जलवायु अनुकूल फसलों की विभिन्न प्रजातियां‘ विषय पर पांच दिवसीय (19 से 23 जुलाई 2024) कृषक प्रशिक्षण प्रारंभ किया गया। इस अवसर पर केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने कृषकों को ऊसर एवं ऊसर से प्रभावित भूमि को सुधार कर उसमें खेती करने हेतु जानकारी दी।उन्होंने ऊसर भूमि की पहचान हेतु बताया कि इसमें लवणों की अधिकता होती है, ऐसी भूमि में कृषि उत्पादन कम होता है।उन्होंने ऊसर भूमि बनने के कारणों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि जमीन को परती छोड़ देना, पेड़ों की अंधाधुंध कटाई,कम बारिश ज्यादा तापमान, आदि प्रमुख कारण हैं। उन्होंने ऊसर भूमियों को सुधारने के लिए कहा कि ऐसी भूमियों में ढैचा बुवाई तथा मेड़बंदी और जिप्सम मिक्सिंग का कार्य अवश्य करें। वरिष्ठ गृह वैज्ञानिक डॉक्टर मिथिलेश वर्मा ने बताया कि कृषक भाई ऊसर सहनशील विभिन्न फसलों की प्रजातियां को अवश्य बोएं जिससे उन्हें ऊसर भूमियों में भी उत्पादन एवं उत्पादकता अधिक प्राप्त हो। उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अरुण कुमार सिंह ने ऊसर भूमियों में बागवानी के हेतु कृषकों को गुर सिखाए।डॉक्टर सिंह ने कृषकों को संबोधित करते हुए कहा कि ऊसर भूमियों में फलदार पेड़ जैसे जामुन, बेल, अमरूद, आंवला, लसोड़ा, शहतूत, नींबू ,करौंदा आदि की बागवानी करें। जबकि छायादार पौधे हेतु सहजन, नीम, करंज, महुआ आदि की बागवानी कर अधिक लाभ अर्जित करें। कार्यक्रम को शुभम यादव, गौरव शुक्ला एवं श्री भगवान पाल ने विशेष सहयोग प्रदान कर सफल बनाया।कृषक प्रशिक्षण में प्रगतिशील किसान श्री राम अवतार, राम शंकर, सियाराम एवं अशोक कुमार सिंह सहित 25 से अधिक किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

email: shahardayaranews@gmail.com

दैनिक

शहर दायरा न्यूज

हिन्दी/अंग्रेजी द्विभाषीय

https://www.facebook.com/shahardayaranews/

वर्ष 9 अंक: 328 कानपुर, शनिवार 20 जुलाई 2024 पृष्ठ: 8 मूल्य-2.00 ₹

निक्रा परियोजना अंतर्गत पांच दिवसीय विशेष कृषक प्रशिक्षण शुरु

शहर दायरा न्यूज

कानपुर। सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर पर निक्रा परियोजना अंतर्गत ऊसर भूमि सुधार एवं जलवायु अनुकूल फसलों की विभिन्न प्रजातियां विषय पर पांच दिवसीय (19 से 23 जुलाई 2024) कृषक प्रशिक्षण प्रारंभ किया गया। इस अवसर पर केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने कृषकों को ऊसर एवं ऊसर से प्रभावित भूमि को सुधार कर उसमें खेती करने हेतु जानकारी दी।उन्होंने ऊसर भूमि की पहचान हेतु बताया कि इसमें लवणों की अधिकता होती है, ऐसी भूमि में कृषि उत्पादन कम होता है।उन्होंने ऊसर भूमि बनने के कारणों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि जमीन को परती छोड़ देना, पेड़ों की अंधाधुंध कटाई,कम बारिश ज्यादा तापमान, आदि प्रमुख कारण हैं। उन्होंने ऊसर भूमियों को सुधारने के लिए कहा कि ऐसी भूमियों में ढैचा बुवाई तथा मेड़बंदी और जिप्सम मिक्सिंग का कार्य अवश्य करें। वरिष्ठ गृह वैज्ञानिक डॉक्टर मिथिलेश वर्मा ने बताया कि कृषक भाई ऊसर सहनशील विभिन्न फसलों की प्रजातियां को अवश्य बोएं जिससे उन्हें ऊसर भूमियों में भी उत्पादन एवं उत्पादकता अधिक प्राप्त हो। उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अरुण कुमार सिंह ने ऊसर भूमियों में बागवानी के हेतु कृषकों को गुर सिखाए।डॉक्टर सिंह ने कृषकों को संबोधित करते हुए कहा कि ऊसर भूमियों में फलदार पेड़ जैसे जामुन, बेल, अमरूद, आंवला, लसोड़ा, शहतूत, नींबू ,करौंदा आदि की बागवानी करें। जबकि छायादार पौधे हेतु सहजन, नीम, करंज, महुआ आदि की बागवानी कर अधिक लाभ अर्जित करें। कार्यक्रम को शुभम यादव, गौरव शुक्ला एवं श्री भगवान पाल ने विशेष सहयोग प्रदान कर सफ़ल बनाया।कृषक प्रशिक्षण में प्रगतिशील किसान श्री राम अवतार, राम शंकर, सियाराम एवं अशोक कुमार सिंह सहित 25 से अधिक किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया

अंक-139 कानपुर, शनिवार 20 जुलाई 2024 पृष्ठ-8

दैनिक

आज का कानपुर

निक्रा परियोजना अंतर्गत पांच दिवसीय विशेष कृषक प्रशिक्षण प्रारंभ

आज का कानपुर

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर पर निक्रा परियोजना अंतर्गत ऊसर भूमि सुधार एवं जलवायु अनुकूल फसलों की विभिन्न प्रजातियां विषय पर पांच दिवसीय (19 से 23 जुलाई 2024) कृषक प्रशिक्षण प्रारंभ किया गया। इस अवसर पर केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने कृषकों को ऊसर एवं ऊसर से प्रभावित भूमि को सुधार कर उसमें खेती करने हेतु जानकारी दी।उन्होंने ऊसर भूमि की पहचान हेतु बताया कि इसमें लवणों की अधिकता होती है, ऐसी भूमि में कृषि उत्पादन कम होता है।उन्होंने ऊसर भूमि बनने के कारणों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि जमीन को परती छोड़ देना, पेड़ों की अंधाधुंध कटाई,कम बारिश ज्यादा तापमान, आदि प्रमुख कारण हैं। उन्होंने ऊसर भूमियों को सुधारने के लिए कहा कि ऐसी भूमियों में ढैचा बुवाई तथा मेड़बंदी और जिप्सम मिक्सिंग का कार्य अवश्य करें। वरिष्ठ गृह वैज्ञानिक डॉक्टर मिथिलेश वर्मा ने बताया कि कृषक भाई ऊसर सहनशील विभिन्न फसलों की प्रजातियां को अवश्य बोएं जिससे उन्हें ऊसर भूमियों में भी उत्पादन एवं उत्पादकता अधिक प्राप्त हो। उद्यान वैज्ञानिक डॉक्टर अरुण कुमार सिंह ने ऊसर भूमियों में बागवानी के हेतु कृषकों को गुर सिखाए।डॉक्टर सिंह ने कृषकों को संबोधित करते हुए कहा कि ऊसर भूमियों में फलदार पेड़ जैसे जामुन, बेल, अमरूद, आंवला, लसोड़ा, शहतूत, नींबू ,करौंदा आदि की बागवानी करें। जबकि छायादार पौधे हेतु सहजन, नीम, करंज, महुआ आदि की बागवानी कर अधिक लाभ अर्जित करें। कार्यक्रम को शुभम यादव, गौरव शुक्ला एवं श्री भगवान पाल ने विशेष सहयोग प्रदान कर सफ़ल बनाया।कृषक प्रशिक्षण में प्रगतिशील किसान श्री राम अवतार, राम शंकर, सियाराम एवं अशोक कुमार सिंह सहित 25 से अधिक किसानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।